English

setuu अध्याय 24

0

Soul Himanshu

Like You and 20K others like this.

हनुमान जी का माया के साथ युद्ध , कर्म – भाग्य – स्वेच्छा – आत्मलोक के ब्रह्मज्ञान के अस्त्र का प्रयोग

[**सेतु संतो की टिप्पणी :** हर अध्याय का अर्थ निकालने के पश्चात् हम उसे साक्षात् हनुमान पूजा में हनुमान जी के समक्ष प्रस्तुत करते हैं | पूजा के हर सत्र में सुर तथा असुर अडचने डालते हैं | उसके बावजूद हम आवश्यक विधि विधान एक सप्ताह के अन्दर पूरा कर लेते हैं | किन्तु इस अध्याय के विधि विधान एक महीने से ज्यादा समय तक चले क्योंकि असुरों ने अभूतपूर्व अडचने पैदा की | इस अध्याय का प्रकाशन हनुमान जी और माया के बीच युद्ध था | हनुमान जी द्वारा इस अध्याय में दिया गया ब्रह्मज्ञान किसी भी आत्मा को माया के शिकंजे से निकालने की भीषण शक्ति रखता है | इस अध्याय को पढना शुरू करने से पहले अपनी आँखे कुछ पल के लिए बंद करें और हमारे साथ सम्मिलित हों चिरंजीवी हनुमान जी को आभार प्रकट करे |]

[**सेतु टिपण्णी :** कालानुक्रम से यह अध्याय दुसरे और तीसरे अध्याय के बीच आना चाहिए किन्तु साधना की प्रक्रिया में यह अध्याय 23 के बाद पढ़ा जाता है | सन्दर्भ यह है : एक मातंग लड़की जिसका नाम उर्मी है को अभी अभी दौरे पड़े हैं और वह एक वृक्ष के नीचे आराम कर रही है | उसके पिछले जन्म की कहानी बताने से पहले हनुमान जी उसको कर्म-इच्छा का ब्रह्म ज्ञान देना आवश्यक समझते हैं |]

हनुमान जी ने अपनी आँखें बंद की | अश्विन देवों ने अपने हाथ उर्मी के मूलाधार चक्र के ऊपर हवा में कमल के आकार में जोड़ लिए | हनुमान जी के होंठ चलने शुरू हुए किन्तु उनके शब्दों ने हवा में एक इंच का रास्ता भी तय नहीं किया | उनके शब्द सीधे उर्मी के मस्तिष्क में गूंजे :

उर्मी, वत्सा, आप थकी हो | चलो मैं आपको विश्व के कुछ रहस्यों के बारे में बताता हूँ इससे पहले कि आप आरोग्यकर नींद में जाओ |

आपके लिए यह विश्व सितारों , ग्रहों , तथा अन्य खगोलीय वस्तुओं का अनंत विस्तार है | क्या आपने कभी सोचा है कि यह विश्व उसके लिए कैसा दीखता होगा जो समय और आकाश से बंधा हुआ नहीं है | उसके लिए जो कुछ घटित हो चुका है , जो घटित हो रहा है और जो घटित होने वाला है वह रहस्य नहीं है | भूत, वर्तमान , भविष्य उसके लिए कोई मायने नहीं रखते | उसे दिखता है कि सब कुछ पहले से ही घटित हो चुका है | वह विश्व की सभी घटनाएं एक साथ देख सकता है | कल्पना करो , लाखों वर्ष में घटी घटनाएं अगर एक साथ दिखें तो कैसी दिखेंगी? यह विश्व समय – आकाश के बाहर से देखने पर एक शांत , चमकदार , श्वेत द्रव पदार्थ की गेंद जैसा दीखता है | यह श्वेत द्रव गेंद के आकार में बंधा हुआ है पतली डोरियों के जाल के कारण जो इस गेंद में फैला है | यह द्रव है आकाश (अस्तित्व का द्रव) और ये डोरियाँ हैं समय की डोरियाँ |

क्योंकि आप काल-आकाश के चक्र में जकड़ी हो , आपको यह विश्व वस्तुओं से बना प्रतीत होता है | आप उन्हें छोटे – बड़े, सजीव – निर्जीव , आदि वर्गों में वर्गीकृत करती हो | जो काल – आकाश के चक्र से आजाद है उसे यह विश्व दृश्यों से बना प्रतीत होता है | वह कोई भी दृश्य चुनकर उसे ऐसे जी सकता है जैसे वह उसी के साथ घटित हो रहा हो |

एक मिनट के लिए आप अपनी उर्मी की पहचान भूल जाओ और मान लो कि आप काल-आकाश से बाहर निकल गई हो | तुम्हारी कोई पहचान नहीं है , कोई दिमाग नहीं है , कोई यादें नहीं है , आप कुछ भी नहीं हो | क्योंकि अगर आप कुछ होती तो काल-आकाश के अन्दर होती , बाहर नहीं | अगर आपके लिए 'शून्य' की कल्पना करना कठिन है तो मान लो कि आप प्रकाश का एक बिंदु मात्र हो |

मैं देख रहा हूँ कि आप अभी भी उर्मी की पहचान से चिपकी हुई हो | इसे त्याग दो | आप शुन्य हो |

आप अर्थात प्रकाश का एक बिंदु काल-आकाश की गेंद के अन्दर घटित हो रहे असंख्य दृश्यों में से एक को जीने के लिए जाने को तैयार हो |

मान लो कि आप यह दृश्य जीना चाहती हो : एक वैभव नामक युवा एक जंगल में आम खा रहा है | आस पास फूलो की चादर बिछी है , पक्षियों का मधुर कलरव और पके फलों की खुशबु हवा में है |

यह काल-आकाश के विशेष निर्देशांकों पर घटित हो रहा एक विशेष दृश्य है | वैभव इस दृश्य के केंद्र में है | (जिस पेड़ के नीचे वैभव आम का रहा है उसके ऊपर एक वानर भी बैठा है जो जंगल के इस भाग को अलग तरीके से देख रहा है | इसलिए उसके द्वारा देखा जा रहा दृश्य अलग दृश्य माना जाएगा जो थोड़े से भिन्न काल-आकाश के निर्देशांकों पर घटित हो रहा है |)

मैं आपको काल-आकाश के ठीक उन निर्देशांकों पर भेज रहा हूँ जहाँ यह दृश्य घटित हो रहा है | जाओ और जाकर इसे जीओ |

'नहीं देव,' आप उत्तर देती हो , 'जिस मंच पर दृश्य चल रहा है उस मंच पर दर्शक का क्या काम ? अगर मैं दृश्य के अन्दर जाउंगी तो दृश्य बिगड़ जाएगा | मैं इस दृश्य में जुड़ना नहीं चाहती , मैं इसे ज्यों का त्यों जीना चाहती हूँ |'

आप शुन्य हो | आपके कही जुड़ने से कोई अंतर नहीं आने वाला है |

'मैं काल-आकाश की गेंद से बाहर हूँ | और यह दृश्य इस गेंद में अन्दर गहराई में घटित हो रहा है | संभवतः मुझे लाखों मील का आकाश और करोड़ों वर्ष का समय तय करना होगा वहां पहुँचने के लिए |' आप उत्तर देती हो |

अगर आप 'शून्य सुरंग' नामक मार्ग से जाओगी तो आपको न तो काल को छूने की आवश्यकता है और न ही आकाश को | अर्थात आप काल-आकाश में किसी भी बिंदु पर झट से पहुँच सकती हो अगर शुन्य सुरंगों के माध्यम से आप जाओ |

'यह कैसे संभव है , देव?' आप पूछती हो | 'आकाश का द्रव काल के धागों द्वारा बनाये गए ढाँचे में अच्छे से भरा है | मुझे तो इसमें कोई सुरंग नजर नहीं आती |'

'हाँ , सुरंगे हैं | सुरंगों की भूलभुलैया है | अगर काल के धागे सात या इससे अधिक संख्या में एक साथ जुड़े हों तो वे ऐसा विकर्षण बल पैदा करती हैं जिसके कारण आकाश का द्रव उन्हें पूरी तरह नहीं छूता | इससे उनके चारों ओर आकाश रहित शुन्य स्थान पैदा हो जाता है | इस शुन्य स्थान में अगर आप यात्रा करो तो आपको न तो आकाश के द्रव को छूने की जरुरत है और न ही काल के धागों को | काल के धागे इन शून्य सुरंगों के बिलकुल बीच से गुजरते हैं |

यह काल-आकाश की गेंद में होने वाली एक सामान्य बात है | चूंकि काल के धागे आकाश के द्रव में जाल की भांति फैले हैं , इससे सुरंगों का एक भूलभुलैया बन जाता है | कल्पना करो कि आप , प्रकाश के एक बिंदु , टेढ़े मेढ़े आकार की सुरंग से गुजर रही हो जिसकी दीवारे आकाश द्रव से बनी है| जो काल के धागे इस सुरंग के बीचों बीच लटके हैं आप उन्हें नहीं छू रही हो | कुछ दूर जाने के बाद यह सुरंग अनेक दिशाओं में अनेक सुरंगों में खुलती है | आप उनमे से एक सुरंग चुनते हो और उसे पार करते हो | फिर से यह सुरंग अनेक दिशाओं में अनेक सुरंगों में खुलती है | आप उनमे से एक चुनकर आगे बढ़ते हो लेकिन आगे सुरंग बंद मिलती है | आप वापिस संधिस्थल पर आकर दूसरी सुरंग चुनते हो और आगे बढ़ते हो | यह सुरंगों की भूलभुलैया है | हर सुरंग काल-आकाश में हो रहे एक दृश्य को दिखाती है |

'तो अगर काल-आकाश वह मंच है जहाँ संसार रुपी नाटक चल रहा है तो ये शून्य सुरंगे वे दर्शक दीर्घाएं हैं जहाँ से यह नाटक देखा जा सकता है | उदाहरणत: वहां एक सुरंग है जहाँ से मैं वैभव द्वारा आम खाए जाने का दृश्य देख सकता हूँ | है न देव?' आप पूछती हो |

न केवल इसे त्रिआयामी रूप में देख सकती हो अपितु इस दृश को सुन , सूंघ , छु तथा अन्य तरीकों से महसूस कर सकती हो |

मैं आपको उस सुरंग में भेजता हूँ जहाँ यह दृश्य चल रहा है | आप वहां पहुँचती हो किन्तु कुछ नहीं देख पाती हो | इस सुरंग की दीवारें एक 360 अंश के एक श्वेत एवं रिक्त परदे की तरह हैं जहाँ आपको वैभव द्वारा आम खाने वाला दृश्य जीवंत दिखना था |

'क्या गलत है ? यह पर्दा रिक्त क्यों है?' आप पूछती हो |

अगर उस श्वेत दीवार के पीछे आम का पेड़ होता भी तो क्या आपको दिखाई देता? आप तो शून्य हो | आपको कोई अनुभव नहीं है कि आम कैसा दीखता है अथवा सूंघने में कैसा होता है | आपको वह अनुभव नहीं है जिससे आप भिन्न भिन्न वस्तुओं की पहचान कर सको | उसके बिना आप ठोस और गैस , सजीव-निर्जीव , गतिमान – स्थिर , छोटा – बड़ा, कोमल – कठोर , अँधेरा – प्रकाश , नीला – हरा , गोल- चकोर , पदार्थ – अपदार्थ आदि भेद नहीं कर सकती | जिस दृश्य को जीने हेतु आप आई हो वह यही पर घटित हो रहा है | आपके पास वो अनुभव नहीं है जो इस दृश्य को जीने हेतु आवश्यक है |

'देव , जिस अनुभव की आप बात कर रहे है उसे इकठ्ठा करने में वैभव को पूरा जीवन लगा है | क्या इसका मतलब यह है कि इस एक दृश्य को जीने के लिए मुझे पहले उसके जीवन के पिछले सभी दृश्य जीने होंगे | और संभवत: उसके पिछले जन्मों के अनुभव भी ?' आप पूछती हो |

इसका यह मतलब तो अवश्य है कि जो दृश्य आप जीना चाहती हो वह बहुत सारे अन्य दृश्यों पर निर्भर है | उनमे से कुछ दृश्य इस प्रकार है :

दृश्य 1 : वैभव गोविन्द्रादी नामक एक गाँव से अपनी यात्रा शुरू करता है और अपनी मंजिल पर सूर्यास्त से पहले पहुँचने की सोचता है |

दृश्य 2 : उसके रथ का पहिया एक जंगल से गुजरते समय कीचड में धंस जाता है |

दृश्य 3 : रथ का पहिया निकालने की कोशिश में वह थक जाता है और विश्राम करने की सोचता है | अब सूर्यास्त से पहले मंजिल पहुंचना नामुमकिन लगता है |

दृश्य 4 : उसे पास में आम के पेड़ नजर आते है और इसे आम खाने की इच्छा होती है |

दृश्य 5 : वह आम खा रहा है |

आप दृश्य 5 जीना चाहती हो किन्तु यह दृश्य बहुत सारे अन्य दृश्यों पर निर्भर है | उदाहरंतः अगर उसके रथ का पहिया कीचड में नहीं धंसता तो उसे आम के पेड़ो का पता नहीं चलता | एक भाग्य से पता चले स्थान पर थकाहट की अवस्था में आम खाने का विशेष भाव दृश्य 5 में नहीं आता अगर दृश्य 1 , 2 , 3 , 4 नहीं हुए होते | दृश्य 5 के घटित होने के लिए एक और दृश्य बहुत महत्वपूर्ण रहा :

दृश्य 6 : वैभव अपनी मंजिल पर सूर्यास्त से पहले पहुंच गया है |

वैभव सूर्यास्त से पहले अपनी मंजिल नहीं पहुंचा | दृश्य 6 उसके लिए वास्तविकता नहीं बन सका | वह उसे जी नहीं सका | जब उसने यात्रा शुरू की तब उसने दृश्य 6 की कल्पना भर की थी | अगर आप किसी दृश्य की कल्पना कर सकते हो तो वह दृश्य काल-आकाश में अस्तित्व में है | आप उसे जी पाते हो या नहीं यह अलग बात है |

जब आप कोई दृश्य जीते हो तो आपको एक अनुभव मिलता है | जब आप किसी दृश्य को जीने की इच्छा रखते हो किन्तु जी नहीं पाते हो तो भी आपको एक अनुभव मिलता है | एक अनुभव को आप प्रकाश का एक पैकेट मान सकते हो | हर पैकेट अपने आप में अद्वितीय होता है क्योंकि इसमें अनुभव के बारे में सूचना भरी होती है | फिर भी हम इन पैकेटों को दो वर्गों में बाँट सकते है : लाल पैकेट और हरे पैकेट | जब आप कोई दृश्य जीते हो तो आप एक हरा पैकेट अर्जित करते हो जिसे कर्म कहा जाता है | जब आप किसी दृश्य को जीने की इच्छा करते हो (सोचते हो / कल्पना करते हो / आशा करते हो / प्रार्थना करते हो कि वह दृश्य घटित हो जाए) तो आप लाल पैकेट अर्जित करते हैं जिसे 'इच्छा' कहा जाता है | जब इच्छा पूर्ण हो जाती है तो वह कर्म बन जाती है अर्थात लाल पैकेट हरा बन जाता है |

वैभव जो कुछ भी है उन अनुभवों के कारण है जो उसने आज तक जीए है अथवा जिन्हें जीने की इच्छा की किन्तु जी नहीं सका है | कर्म और इच्छा ही वो दो चीजे हैं जो किसी की पहचान बनते हैं |

वैभव के कर्म तथा इच्छाएं उसके जन्म तथा उससे पहले से शुरू होते हैं | उदाहरण के तौर पर एक दृश्य है जिसमे वह एक बच्चा है और आम शब्द का अर्थ सीख रहा है ; एक दृश्य है जिसमे वह आम पहली बार चख रहा है ; एक दृश्य है जिसमे वह रथ चलाना सीख रहा है ; आदि आदि | उसने हर दृश्य से अनुभव लेकर अपनी पहचान बनाई है |

उसके जन्म के दिन भी उसकी एक विशिष्ट पहचान थी | उसका एक अनन्य चेहरा था , उसने एक अनन्य परिवार तथा माहौल में जन्म लिया था | वह विशिष्टता कहाँ से आई? उसके पिछले जन्मों के अनुभवों अर्थात कर्म-इच्छाओं से |

वैभव द्वारा आम खाने का एक साधारण सा दृश्य भी हजारों दृश्य को जीकर अर्जित किये गए उसके अनुभवों अर्थात कर्म-इच्छाओं पर निर्भर करता है |

'मैं भी यही कह रही थी , देव | इस साधारण से दृश्य को जीने के लिए मुझे उसके इस जीवन तथा पिछले जन्मों के असंख्य दृश्यों से अनुभव इकठ्ठे करने पड़ेंगे | उसे जिन कर्म-इच्छाओं के हरे- लाल पैकेटों को इकठ्ठा करने में सैकड़ों साल लगे है, वो मुझे चाहिए होंगे |' आप हिसाब लगाती हो |

ये दृश्य पहले ही घटित हो चुके हैं | ये अनुभव पहले ही लिए जा चुके हैं | कर्म-इच्छा के जो पैकेट आपको इस दृश्य के जीने हेतु चाहिए वे इस दृश्य को दिखाने वाली शून्य सुरंग में पहले ही मौजूद है | जिस सुरंग में आप इस समय इस दृश्य को जीने के लिए उपस्थित हो वह पहले से ही आवश्यक कर्म-इच्छा के प्रकाश से भरा है |

'तो मैं यह दृश्य क्यों नहीं देख पा रही हूँ , देव? इस सुरंग की दीवारें रिक्त सी क्यों हैं?' आप पूछती हो |

आप शून्य हो | इस दृश्य को जीने के लिए आपको कुछ बनना होगा | आपको एक पहचान ओढनी होगी | आपको कर्म-इच्छा का चोला पहनना होगा |

'वह कैसे किया जाए , देव? आप पूछती हो |

काल के धागों पर सवार हो जाओ | जब आप ऐसा करोगी , इस सुरंग में भरा प्रकाश आप पर एकत्रित हो जाएगा और आपको प्रकाश की एक देह मिलेगी जिसे लिंग कहते है | लिंग-देह एक मशाल की तरह काम करेगी | वह सुरंग की दीवारों पर प्रकाश डालेगी और आपको जो दृश्य देखना है वह दिखेगा |

'दिखेगा? एक दर्शक की भांति? मैं इस दृश्य को जीना चाहती हूँ , देव |' आप दोहराती हो |

शून्य सुरंग से आपको यह दृश्य 360 अंश में तो दीखता ही है , इसके साथ साथ इस दृश्य से जुडी भावनाए भी महसूस करने को मिलती हैं | जब लिंग-देह इस सुरंग की दीवारों पर प्रकाश डालती है तब दृश्य जीवंत हो जाता है और आप काल के धागों पर सरकते हो | जब सुरंग पूरी पार करने के बाद उस छोर से आप निकलते हो तो दृश्य समाप्त हो जाता है | आपको समय का गुजरना , आम का स्वाद , जंगल की आवाजें व सुगंध तथा वह हर चीज जो इस दृश्य में है , महसूस होती है | संक्षेप में , इस सुरंग से गुजरते हुए आपको लगेगा कि आप वैभव हो | आप इस दृश्य को ऐसे जीओगे जैसे आप वैभव हो |

याद रखो, आप दृश्य के रचयिता नहीं हो | अगर आप यहाँ इस दृश्य को नहीं देख रहे होते , नहीं जी रहे होते , नहीं महसूस कर रहे होते तो भी यह दृश्य घटित हो रहा होता | आप केवल अनुभवकर्ता हो | आप इस सुरंग में अनुभव को जीने आये हो | वैभव उस किरदार का नाम है जिसे आप जीने आये हो |

जब यह दृश्य ख़त्म हो जाता है तो आपके पास विकल्प है कि आप काल के धागों से नीचे उतरकर पुन: शून्य हो जाते हो अथवा उन पर सवार रहकर अगला दृश्य जीते हो | काल के धागों पर चढ़ना आसान है पर उतरना बहुत मुश्किल | इससे पहले कि आप उतरकर पुनः शून्य अवस्था में आ पाओ , हो सकता है लाखों दृश्य जी जाओ |

तुम्हारी काल के धागों पर सवार होकर उतरने तक की यात्रा में आपको 'आत्मा' कहा जाएगा | इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कितने समय तक काल के धागों पर रहो और कितने दृश्य जीओ , वह केवल एक आत्मा की यात्रा कहलाएगी | अगर दृश्य 5 को जीने के बाद आप काल के धागों से न उतर सको तो हो सकता है आप वैभव के किरदार में सैकड़ो दृश्य जी जाओ और फिर भास्कर के किरदार में आदि आदि | जब तक आप काल के धागों से उतर नहीं जाते आपको एक ही आत्मा माना जाएगा | आत्मा को जो किरदार वह जीते है उनके नाम से जाना जा सकता है : जैसे 'वैभव की आत्मा' और 'भास्कर की आत्मा' एक ही आत्मा के नाम होंगे अगर वह बीच में एक बार भी काल के धागों से नहीं उतरती है |

मान लो कि आप दृश्य 5 को जीने के बाद काल के धागों से उतरने में सफल हो जाओ और फिर किसी दूसरी सुरंग में जाकर वैभव के किरदार में ही एक अन्य दृश्य जीओ , 'दृश्य X' तो वह आत्मा जिसने दृश्य 5 जीया और वह जिसने 'दृश्य X' जीया , दो अलग अलग आत्माएं मानी जायेंगी|

'देव , आत्मा की परिभाषा देने के लिए मैं आपको अपनी कृतज्ञता प्रकट करती हूँ किन्तु इस समय मैं यह अधिक जानने की इच्छुक हूँ कि एक बार चढ़ने के बाद काल के धागों से उतरना मुश्किल क्यों हो जाता है ?' आप पूछती हो |

यह समझने के लिए आपको विश्व को दो भागों में देखना होगा : आत्मिक संसार और बाहरी संसार |

आत्मिक संसार यानी शुन्य सुरंगे जहाँ पर ये चीजें होती हैं : लाल – हरे प्रकाश के पैकेट अर्थात कर्म – इच्छाएं , काल के धागे जो सुरंगों के बीचों बीच से गुजरते हैं , आकाश का द्रव जो सुरंगों की दीवार प्रतीत होता है जो उस परदे की भांति दिखती है जहाँ दृश्य चलने वाला हो | आप , शून्य , काल के धागे पर सवार होते हो , लाल – हरे रंग के पैकेट आप पर एकत्रित हो जाते हैं जिससे आपको प्रकाश की देह मिलती है और फिर आप दृश्य जीते हो और काल के धागों पर आगे फिसलते हो |

बाहरी संसार वह है जहाँ दृश्यों के किरदार अस्तित्व में हैं | सभी दृश्य पहले से ही घटित हो चुके हैं | दृश्यों में किसी प्रकार के बदलाव की कोई गुंजाइश नहीं है | अच्छी बात ये है कि जो भी दृश्य आप सोच सकते हो वह पहले से ही अस्तित्व में है | किसी दृश्य में बदलाव की कोई आवश्यकता ही नहीं है | किसी दृश्य में कोई बदलाव करना चाहो तो वह बदलाव किसी अन्य दृश्य में पहले से ही उपस्थित है |

वैभव का उदाहरण लेते हैं | आम खाने के बाद वह अपने हाथ धोने की इच्छा रखता है | वह अपने फंसे रथ के पास जाता है और पाता है कि उसका पानी का बर्तन खाली पड़ा है | दृश्य कुछ इस प्रकार हैं :

दृश्य 7 : वह दृश्य 8 की कल्पना करता है और उसे जीने की इच्छा रखता है |

दृश्य 8 : आम खाने से चिपचिपे हुए उसके हाथ अब पूरी तरह धुले हुए हैं और वह तरोताजा महसूस कर रहा है |

दृश्य 9 : हाथ धोने की इच्छा से वह अपने रथ की ओर जा रहा है |

दृश्य 10 : वह रथ के पास पहुँच चूका है और पाता है कि उसके बर्तन में पानी नहीं है |

दृश्य 11 : उसकी हाथ धोने की इच्छा पानी न होने के कारण अपूर्ण रहती है | वह चिडचिडा महसूस कर रहा है |

उसने इच्छा की थी दृश्य 8 जीने की किन्तु उसे जीना पड़ा दृश्य 11 . ऐसा क्यों होता है ? चाहो कुछ और , जीने को मिलता है कुछ और | इतना ही नहीं , कुछ अनचाहे दृश्य भी जीने पड़ते हैं , जैसे दृश्य 9 और दृश्य 10. रथ तक चलने की और पानी तलाशने की जरुरत ही क्यों पड़ती है? इस क्षण आपको हाथ धोने की इच्छा हुई , दुसरे क्षण आपके हाथ धुल जाने चाहिए | जो आप चाहो उसके लिए कुछ करने की जरुरत ही नहीं होनी चाहिए |

दृश्य 8 और दृश्य 11 दोनों अस्तित्व में है | आपके पास विकल्प है कि आप कौन सा जीना चाहो | आप दोनों भी जी सकते हो | इन दोनों के लिए एक सुरंग है जहाँ पर ये दृश्य चल रहे हैं | आप शून्य हो और शून्य सुरंगों में काल और आकाश दोनों नहीं है अगर आप काल के धागों को न छुओ ; आप किसी भी सुरंग में बिना समय खपाए पहुँच सकते हो | किसी भी सुरंग में जाओ , काल के धागों पर सवार हो जाओ और दृश्य जीने लग जाओ |

समस्या आती है सुरंगों के टेढ़े मेढे आकारों के कारण | मान लो कि आप उस सुरंग में हो जहाँ दृश्य 7 चल रहा है , सुरंग 7 कह लेते हैं इसे | आप इस दृश्य को जी रहे हो | आपने कर्म-इच्छा के पैकेटों का एक विशेष मिश्रण अपने ऊपर ओढ़ रखा है | अतः आपकी एक विशेष आकार की प्रकाश देह है |

अब आप उस सुरंग में जाना चाहते हो जहाँ दृश्य 8 चल रहा है , सुरंग 8 कह लेते हैं इसे | इसका विशेष आकार है | सुरंग 7 में आपकी जो प्रकाश देह है वह शायद सुरंग 8 में न फंसे | फंसाने की आवश्यकता भी नहीं है | आप सुरंग 7 की देह को त्यागकर शून्य अवस्था में आ सकते है और फिर सुरंग 8 में जाकर वहां पर उपस्थित कर्म-इच्छा के पैकेटों से नई प्रकाश देह हासिल कर सकते हैं |

अगर आप हर दृश्य को जीने के बाद शून्य अवस्था में आ जाते हैं तो आप कोई साधारण आत्मा नहीं है , आप देव हैं |

साधारण आत्मा होने के कारण आप अपनी वर्तमान देह के बारे में स्वत्वात्मक हैं | आप अपनी वर्तमान प्रकाश देह से एक भी कर्म-इच्छा का पैकेट नहीं गंवाना चाहते हैं | आप कहते हैं, 'मैं सुरंग 8 में जाना तो चाहता हूँ किन्तु मैं अपना एक भी कर्म-इच्छा का पैकेट नहीं गंवाना चाहता | हाँ कुछ और पैकेट मुझे दे दो , मंजूर है , लेकिन जो पैकेट हैं उनमे से एक भी मैं नहीं खोना चाहता |'

परिणाम? आपकी वर्तमान देह सुरंग 8 में नहीं फंसती और आप सुरंग 8 की बजाये सुरंग 11 में फिसल जाते हो : आप पाते हो कि आपके पानी के बर्तन में पानी नहीं है | आपकी हाथ धोने की इच्छा अधूरी रह जाती है |

एक साधारण आत्मा आत्मिक संसार के बारे में भूल जाती है और बाहरी संसार से लगाव कर बैठती है दृश्य शुरू होते ही| उसे महसूस होता है कि वह काल के धागों से चिपक गई है और उसके पास एक के बाद एक दृश्य जीने के अलावा कोई रास्ता नहीं है | बाहरी संसार एक दैत्य माया की तरह है जिसके पास आपको गुलाम बनाये रखने के असंख्य तरीके हैं |

आपने वैभव द्वारा आम खाए जाने का दृश्य जीया | उससे अगला दृश्य अर्थात वैभव द्वारा हाथ धोने की इच्छा रखने का दृश्य जीने के क्या आवश्यकता है?

आपको लगता है कि आपको वैभव का किरदार जीते रहना पड़ेगा अन्यथा वह मर जाएगा | आपको लगता है कि आप वैभव हो | आपको ऐसा क्यों लगता है ? भूतकाल के अनुभवों के कारण | आपको लगता है कि आपने वैभव के रूप में जन्म लिया , वैभव के जीवन के बारे में आपकी यादें हैं , आपका परिवार है , आपको सूर्यास्त से पहले अपनी मंजिल तक पहुँचना है , आपका रथ फंसा हुआ है आदि आदि |

आप यह भूल जाते हो कि आप शुन्य हो | आप तो यहाँ केवल एक दृश्य जीने आये थे | वे आपके भूतकाल के अनुभव कैसे हो सकते हैं ? आपने तो ये अनुभव यह दृश्य जीने के लिए कुछ पल पहले ही ओढ़े थे | किस रूप में? लाल और हरे प्रकाश पैकेटों के रूप में, कर्म-इच्छा के पैकेटों के रूप में | अगर ये पैकेट आपने उतार कर फेंक दिए तो आपका वैभव और उसकी दुनिया से कोई लगाव नहीं रह जाएगा | आप शून्य अवस्था में वापिस आ जाओगे और वैभव का जीवन आपके बिना भी चलता रहेगा | जब आप वहां नहीं होगे तो कोई अन्य आत्मा उसके जीवन के दृश्यों को जी रही होगी| आपको उसके बारे में चिंता करने की आवश्यकता नहीं है | उसके साथ जो होना है वह पहले से ही हो चूका है |

आपके पास कोई भी दृश्य जीने की स्वतंत्रता है किन्तु किसी दृश्य को रचने की नहीं | इस ज्ञान के अभाव में यह विश्वास पैदा होता है कि आप कर्ता अथवा रचयिता हो | यह कोई बुरी बात नहीं है | आप जब दृश्य जी रहे हो तो आपको कर्ता जैसा महसूस होना भी चाहिए | इससे अनुभव में वास्तविकता आती है | लेकिन जैसे ही दृश्य ख़त्म होता है यह ज्ञान सक्रिय हो जाना चाहिए और आपको दृश्य से बाहर और काल के धागों से नीचे आ जाना चाहिए |

एक साधारण आत्मा काल के धागों से हर दृश्य के बाद नहीं उतर सकती , वह हर दृश्य की समाप्ति पर अपनी प्रकाश देह को नहीं त्याग सकती | लेकिन हाँ , वह अपनी प्रकाश देह को इतनी लचीली तो रख ही सकती है कि वह जिस सुरंग में जाना चाहे जा सके | जैसे आप एक आत्मा हो जो उर्मी नामक एक मातंग महिला का किरदार जी रही है | इस समय आपके किरदार को दौरे पड़ने की गंभीर बिमारी है | आप एक दृश्य जीना चाहती है , और उसके बाद दृश्यों के एक श्रंखला , जिसमे आपका किरदार स्वस्थ है |

अगर आपको कर्म-इच्छा के जो पैकेट इस समय आपके पास हैं उनको छोड़ने में कोई दिक्कत नहीं है तो आप झट से अपनी पसंद की सुरंग में जाकर अपना मनचाहा दृश्य जी सकती हैं |

'मैं कर्म-इच्छा के कोई पैकेट नहीं पकडे रहना चाहती , देव | सब ले लो किन्तु मेरी स्वस्थ जीवन जीने की इच्छा पूरी कर दो |' आप याचना करती हैं |

आप , उर्मी , इस समय एक हरे छाते के नीचे आराम कर रही हैं | यह छाता आपके लिए कौन पकडे हुए हैं ? आपको हैरानी होनी चाहिए, किन्तु नहीं होती | क्योंकि आप कर्म-इच्छा के कुछ पैकेट पकडे हैं जो आपको कहते हैं कि यह छाता कुछ और नहीं बल्कि एक साधारण चीज हैं जिसका नाम 'वृक्ष' है |

हवा आपके चारों और है और आपके अन्दर भी | आप हवा के समुद्र में तैर रहे हैं | आपको हैरान होना चाहिए ,लेकिन आप नहीं होते | क्योंकि आपके पास कुछ कर्म-इच्छा के पैकेट हैं जो कहते हैं कि यह तो एक साधारण बात है जिसका नाम है 'सांस लेना' |

जब आप एक बाघ को देखती हो , डर जाती हो | कोई अच्छा दृश्य आपके चेहरे पर ख़ुशी ले आता है | जो लालची लोग जंगल तबाह कर रहे हैं उनके बारे में एक सोच भी आपको क्रोध से भर देती है | कोई भी निस्वार्थ घटना होते देख आप भावुक हो जाती हैं | ये सब भावनाएं कहाँ से आती हैं ? कर्म-इच्छा के पैकेटों के कारण |

'मैं उर्मी के रूप में पैदा हुई | मेरा जीवन सवास्थ्य सम्बन्धी संघर्षों में गुजरा | मैं इन और इन विचारों में विश्वास करती हूँ | मुझे एक दिन मरना है |' ये सब विचार कहाँ से आते हैं ? उन कर्म-इच्छा के पैकेटों से जिनकी बनी प्रकाश देह आप ओढ़े हुए हो |

जब आप कोई दृश्य जी रहे हो तब कर्म-इच्छा के पैकेटों को पकडे रहना और दृश्य का आनंद लेना ठीक है | लेकिन जैसे ही दृश्य समाप्त हो जाता है और आपको अगला दृश्य जीने की इच्छा होती है तब आपको इन पैकेटों से अपनी पकड़ ढीली कर लेनी चाहिए | आपको अपने आस पास की हर चीज पर प्रश्न करना चाहिए | हर चीज पर प्रश्न करने के विचार पर भी प्रश्न करना चाहिए | जब आपके आस पास का संसार एक रिक्त परदे जैसा नजर आने लगे तब आपको पुनः कर्म-इच्छा के पैकेटों को पकड़ लेना चाहिए | इससे आप पायेंगे कि आपने जिस दृश्य को जीने की इच्छा की थी , आप वही दृश्य जी रहे हैं |

हनुमान जी की लीलाओं का यह अध्याय यही समाप्त होता है |

Like You and 20K others like this.

--- सीधे अर्पण पर जाएँ ---

आत्मा पर भ्रम की परतें

Himanshu, अध्याय पढने के बाद यह पर्यवेक्षण करना आवश्यक है कि आप कैसा महसूस कर रहे हैं | अगर आप कुछ ऐसा महसूस कर रहे हैं - "वाह! मैंने कुछ नया पाया |" अथवा "वाह, मैंने कुछ नया सीखा |" अथवा "मेरी अपने प्रभु ले प्रति भक्ति ओर भी बढ़ गई|" इत्यादि तो आप अपने प्रभु की ओर एक कदम भी नहीं बढ़ें हैं | आप उतनी ही दूरी पर अटके हुए हैं |

अगर अध्याय पढने के बाद आप कुछ ऐसे महसूस कर रहे हैं जैसे आपके अन्दर से कुछ बाहर निकलकर गिर पड़ा हो और आप आत्मा से हल्का महसूस कर रहे हों तो आप अपने प्रभु की तरफ कम से कम एक कदम बढ़ चुके हैं |"

आपकी आत्मा एक आईने की तरह है जिसके ऊपर इस बाहरी संसार के कारण धुल चढ़ गई है | अगर अध्याय पढने के बाद आप ऐसा महसूस कर रहे हैं कि आपने कुछ नया पा लिया है तो उसका अर्थ है कि आपने अपनी आत्मा पर एक और परत चढ़ा ली है | आप प्रभु के साक्षात् दर्शन तभी कर सकते हैं जब आप ये परतें हटायें | अतः अगर आप इस समय आत्मा से हल्का महसूस नहीं कर रहे हैं तो आप कुछ समय बाद फिर आकर यह अध्याय पढ़िए |

अगर आप आत्मा से हल्का महसूस कर रहे हैं तो इसका अर्थ है कि आपने अपनी आत्मा के आईने से कम से कम एक धुल की परत साफ़ कर ली है | अब आपका अगला कदम होना चाहिए कि यह धुल की परत वहां पुनः न बैठे | (जब आप अपने घर में कोई आइना कपडे से साफ़ करते हैं तो आप उस कपडे को अन्दर यूँ ही नहीं रख देते , आप उसे बाहर झड़काकर आते हैं)

धुल की परत फिर से आत्मा पर न बैठे, इसके लिए प्रभु को अर्पण किया जाता है | अर्पण फूलो , फलो या किसी भी ऐसी वस्तु का हो सकता है जो आपसे जुडी हुई हो | मातंग संस्कृति में आत्मा से हल्का महसूस करने के 108 घंटे के अन्दर अन्दर अर्पण करने का विधान है | आप बाजार से भी फल का अर्पण खरीद सकते हैं क्योंकि आपका पैसा भी आपसे जुडा हुआ है |

भगवान् विष्णु का अंतिम अवतार

जब भगवान् राम ने अपनी सांसारिक लीलाएं पूरी की और विष्णु लोक में चले गए तब हनुमान जी भी अयोध्या से वापिस आ गए और जंगलों में रहने लगे | वे अपने अदृश्य रूप में भक्तों की सहायता करते रहे | लेकिन जब महाभारत काल में भगवान् विष्णु कृष्ण के रूप में धरती पर आये तब हनुमान जी भी जंगलों से बाहर आये और पांड्वो की सहायता की (उन्होंने पूरे युद्ध में अर्जुन के रथ की रक्षा की)

महाभारत युद्ध के पश्चात् हनुमान जी फिर जंगल में चले गए | उन्होंने अदृश्य रूप में भक्तों की रक्षा करना जारी रखा | लेकिन दृश्य रूप में केवल ऋषि मुनि ही उन्हें देख सकते थे वो भी जंगलों में | उदाहरण के तौर पर , मातांगो को जंगल में हर 41 साल बाद उनके आतिथ्य का सुख प्राप्त होता था |

अब हनुमान जी ने अपनी लीलाए करके एक बार फिर से पूरे संसार के सामने अपने दृश्य स्वरुप का दर्शन कराया है | लेकिन वे ऐसा तभी करते हैं जब भगवान् विष्णु किसी अवतार में धरती पर मौजूद हों | क्या भगवान् विष्णु ने कल्कि के रूप में अवतार ले लिया है ? या अवतार लेने वाले हैं ? इसके कुछ हिंट हनुमान जी ने अपनी लीलाओं में दिए हैं | शायद आगे आने वाले अध्यायों में यह पूर्णतः सपष्ट हो जाएगा |

तब तक श्री हनुमान जी के निर्देशानुसार साक्षात् हनुमान पूजा अनवरत जारी है | अगर आप अपना कोई प्रश्न , संदेह अथवा प्रार्थना साक्षात् हनुमान पूजा में सम्मिलित करवाना चाहते हैं तो सेतु के माध्यम से कर सकते हैं | (write them in "My Experiences" section.)

Himanshu, आप साक्षात् हनुमान पूजा में अर्पण भेजकर यजमान के रूप में भी हिस्सा ले सकते हैं | अर्पण हनुमान जी की लीलाओं का अध्याय पढने के 108 घंटे के अन्दर होता हैं |

Your Offerings so far at this chapter: Fruits worth

Rs. 0

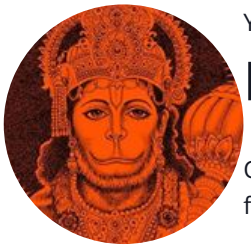

Offerings have been closed for you on this chapter because 108 hours have passed since you first read this chapter.You did not give offerings in that time period. Check next chapter.

Your Successful transactions on this chapter :

Your successful attempts of Arpanam on this chapter are listed individually below :

Attempt ID	amount	Status	Time
538740	Rs. 108	Successful	10/02/2017 - 13:44

Your Incomplete/Failed transactions on this chapter :

You don't have any incomplete or failed transaction on this chapter.

« Previous Next Chapter »

भक्तिमाला मंत्र अनुभव कृतज्ञता प्राचीर विन्यास

Home **मातंग इतिहास** Terms of Use Privacy Policy Reach Us **तकनीकी सहायता** Setuu © 2016 Read in English

Gratitude Wall Devotee Queries Experiences and Prayers Hanuman Leelas

Print